Pdfformats.com

शिव आरती

जय शिव ओंकारा, ॐ जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, अर्द्धांगी धारा।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे।

हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

दो भुज चार चतुर्भुज दस भुज अति सोहे।

तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

अक्षमाला बनमाला मुंडमाला धारी।

चन्दन मृगमद सोहे, भाले शुभकारी।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे।

सनकादिक ब्रम्हादिक भूतादिक संगे।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

कर के मध्य कमंडलु चक्र त्रिशूलधर्ता।

जगकर्ता जगभरता, जग पालनकर्ता।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे।।।। ॐ जय शिव ओंकारा।।

Pdfformats.com